फैजाबाद
जागरण सिटी

अयोध्या (फैजाबाद) जागरण

'खतरनाक है पारे का ज्यादा इस्तेमाल'

फैजाबाद, 29 जनवरी (जाका): 'स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में जहरीला पारा' विषय पर शनिवार को प्रेस क्लब में आयोजित कार्यशाला में अवध विश्वविद्यालय के पर्यावरण वैज्ञानिक डॉ.सिद्धार्थ शुक्ला व माइक्रोबायोलाजी विभाग के प्रवक्ता डॉ.शैलेंद्र कुमार ने कहा कि पारा अनेक स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन सकता है। इसकी वजह से मानसिक रोग भी हो सकते है।

यूथ राउंड टेबल सोसायटी के तत्वावधान में हुई इस कार्यशाला में वैज्ञानिकों ने कहा कि पारा का स्वास्थ्य सेवाओं में अनियंत्रित प्रयोग व असुरक्षित प्रबंधन न सिर्फ उपचार कराने वाले मरीजों को खतरे में डाल सकता है, बल्कि सेवा प्रदाता डाक्टर, नर्स, वार्ड ब्वाय आदि के लिए भी खतरा है।

कार्यशाला को संबोधित करते हुए जिला स्वास्थ्य शिक्षा सूचना अधिकारी डॉ.सीपी सिंह ने कहा कि सरकारी तंत्र पारे को नियंत्रित करने के लिए ठोस उपाय कर रहा है, स्वास्थ्य सेवाओं के व्यापक स्वरुप को देखते हुए जन जागरूकता की आवश्यकता भी है। प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के क्षेत्रीय अधिकारी घनश्याम ने कहा कि अस्पताली कूड़ा निस्तारण करने के लिए सरकार द्वारा कानून बनाए गए है और आगामी 31 जनवरी व एक फरवरी को स्वास्थ्य सेवा प्रदाता के अभिमुखीकरण कार्यशाला का आयोजन भी किया जाएगा। यूथ राउंड टेबिल के अभिषेक सोनी व अतहर शम्सी ने बताया कि आम तौर पर मध्यम क्षमता के चिकित्सालयों में 70 थर्मामीटर प्रतिमाह टूटते है, जिसकी वजह से पारा फैलता है। पारे के उपयुक्त प्रबंधन की जानकारी नहीं होने का खामियाजा मरीजों व सेवा प्रदाताओं को भुगतना पड़ता है। इस मौके पर प्रमुख रूप से अनिल कुमार, विवेक चतुर्वेदी, विशाल, अखिलेश पांडे, निशा, मजहर, कमाल, मोहम्मद आसिफ, मुजाहिद, फराज व शहनवाज आलम समेत अन्य मौजूद थे।

यूथ राउंड टेबिल सोसाइटी द्वारा आयोजित कार्यशाला में उपस्थित लोग

Title: "Excess use of Mercury is dangerous"

News paper: Dainik Jagran, Date: 29 January 2011

आज फैजाबाद

कार्यक्रम में मौजूद पदाधिकारीगण।

अभिमुखीकरण कार्यशाला का आयोजन कल से

फैजाबाद(आ.सं.)। स्थानीय सेवाओं में विभिन्न रूप से उपयोग होने वाला पारा(मरकरी)अनेकों स्वास्थ्य समस्याओं विशेषकर मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का कारण भी हो सकता है। वैज्ञानिक शोध में इस बात की पुष्टि हो चुकी है कि पारा का स्वास्थ्य सेवाओं में अनियंत्रित प्रयोग व असुरक्षित प्रबन्धन न सिर्फ उपचार करने वाले मरीजों को खतरे में डालता है बल्कि स्वास्थ्य सेवा प्रदाता जैसे डाक्टर, नर्सों, वार्ड ब्वाय के लिए भी मानसिक समस्या का कारण बनता है। यह जानकारी देते हुए डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के माइक्रोबायोलाजी विभाग के प्रवक्ता शैलेन्द्र कुमार व पर्यावरण विभाग के प्रवक्ता डॉ. सिद्धार्थ शुक्ला ने व्यक्त की। ज्ञात हो कि स्वास्थ्य व पर्यावरण के मुद्दों पर कार्य करने वाले सामाजिक संगठन यूथ राउण्ड टेबिल सोसाइटी द्वारा स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में जहरीला पारा विषयक अभिमुखीकरण कार्यशाला का आयोजन स्थानीय प्रेस क्लब में स्वास्थ्य विभाग, उ.प्र. प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड तथा स्वैच्छिक संस्थाओं के संगठन जनहित वालंटरी एक्सन नेटवर्क के समन्वय से किया गया। कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए जिला स्वास्थ्य शिक्षा सूचना अधिकारी डॉ. सीपी सिंह ने कहा कि स्वास्थ्य सेवाओं में पारा का प्रयोग रोकने के उद्देश्य से प्रयास सरकारी तंत्र द्वारा किया जा रहा है लेकिन स्वास्थ्य सेवाओं के व्यापक स्वरूप को देखते हुए जन जागरूकता की आवश्यकता है। उ.प्र. प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के क्षेत्रीय अधिकारी घनश्याम ने जानकारी देते हुए बताया कि अस्पतालों कूड़ा कचरा, निस्तारण हेतु सरकार द्वारा जरूरी कानून बने हुए है, जिसके लिए उनका विभाग प्रयासरत है व इसी सम्बन्ध में आगामी 31 जनवरी व 1 फरवरी को स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के साथ अभिमुखीकरण कार्यशाला का आयोजन भी किया जा रहा है। यूथ राउण्ड टेबिल के निर्देशक अभिषेक सोनी व अतहर शम्शी ने जानकारी देते हुए बताया कि स्वास्थ्य सेवाओं में आमतौर पर प्रयोग में आने वाले उपकरण जैसे थर्मामीटर, ब्लड प्रेशर मशीन व स्फैगमोमोमीटर तथा रोशनी देने वाले सीएफएल तथा इलेक्ट्रानिक स्विच में पारे का अनियंत्रित रूप से इस्तेमाल होता है। आम तौर पर एक मध्यम क्षमता के अस्पताल में आमतौर पर 7० थर्मामीटर प्रतिमाह टूटते है जिससे पारा फैलता है लेकिन पारा के उपयुक्त प्रबन्ध की जानकारी न होने से मरीजों व सेवा प्रदाताओं को घातक परिणाम झेलने पड़ते है जैसे मानसिक असंतुलन, चिड़चिड़ापन व भूलने की बीमारी इत्यादि काफी आम समस्याएं होती है। जनहित में वालंटरी एक्सन नेटवर्क द्वारा समाज के तहत में सेवा प्रदाताओं के पारा प्रबन्धन कौशल पर सेवा प्रदाताओं को प्रशिक्षण उपलब्ध कराकर उन्हें इसके खतरों से परिचित कराने की मांग की गई। कार्यालय में प्रमुख रूप से राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन के जिला कम्युनिटी कोबलाइजर अनिल कुमार व विवेक चतुर्वेदी, विभिन्न स्वैच्छिक संस्थाओं के प्रतिनिधि डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विवि के समाज कार्य विभाग के छात्र विशाल, अखिलेश पाण्डेय, अखिलेश सिंह तथा यूथ राउण्ड टेबिल के कार्यकर्ता निशा, मजहर, कमाल, मो. आसिफ, मुजाहिद, फराज, शहनवाज आलम, मो. अरशद प्रमुख रहे।

Orientation workshop on Mercury in Health Care Sector

Date: January 29, 2011, News Paper: "AAJ"

राष्ट्रीय सहारा

अपना शहर

फैजाबाद

लखनऊ। रविवार • 30 जनवरी • 2011

'स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में जहरीला पारा' पर गोष्ठी

फैजाबाद, (एसएनबी)। स्वास्थ्य व पर्यावरण के मुद्दों पर कार्य करने वाले सामाजिक संगठन यूथ राउण्ड टेबिल सोसाइटी द्वारा 'स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में जहरीला पारा' विषयक अभिमुखीकरण कार्यशाला का आयोजन स्वास्थ्य विभाग, उप्र प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड तथा स्वैच्छिक संस्थाओं के संगठन जनहित वालंटरी एक्शन नेटवर्क के समन्वय से किया गया। कार्यशाला में जिला स्वास्थ्य शिक्षा सूचना अधिकारी डा. सीपी सिंह ने कहा कि स्वास्थ्य सेवाओं में पारा का प्रयोग रोकने के प्रयास सरकारी तंत्र द्वारा किया जा रहा है। लेकिन स्वास्थ्य सेवाओं के व्यापक स्वरूप को देखते हुए जागरुकता की आवश्यकता है। डा. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के माइक्रोबायोलोजी विभाग के प्रवक्ता शैलेंद्र कुमार व पर्यावरण विभाग के प्रवक्ता डा. सिद्धार्थ शुक्ल ने बताया कि स्थानीय सेवाओं में विभिन्न रूप से उपयोग होने वाला पारा विशेषकर मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का कारण भी हो सकता है। वैज्ञानिक शोध में इस बात की पुष्टि हो चुकी है कि पारा का स्वास्थ्य सेवाओं में अनियन्त्रित प्रयोग व असुरक्षित प्रबंधन न सिर्फ उपचार करने वाले मरीजों को खतरे में डालता है बल्कि स्वस्थ्य सेवा में डाक्टर, नर्सों, वार्ड ब्वाय के लिए भी मानसिक समस्या का कारण बनता है। क्षेत्रीय अधिकारी घनश्याम ने बताया कि 31 जनवरी व पहली फरवरी को स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओ के साथ अभिमुखीकरण कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। कार्यशाला में प्रमुख रूप से अनिल कुमार, विवेक चतुर्वेदी, विशाल, अखिलेश पांडेय आदि मौजूद रहे।

Workshop on "Toxic Mercury in Health Care sector"

Date: January 30, 2011, News Paper : "Rastriya Sahara"

रविवासरीय

हिन्दुस्तान

• फैजाबाद संस्करण

लखनऊ, माघ कृष्ण द्वादशी, विक्रम सम्वत् 2067, रविवार, 30 जनवरी 2011

मानसिक समस्याओं का कारण है पारा

फैजाबाद। विभिन्न रूप में उपयोग होने वाला पारा (मरकरी) विशेष कर मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का कारण हो सकता है। पारे का स्वास्थ्य सेवाओं में अनियंत्रित प्रयोग उपचार कराने वाले मरीजों को खतरे में डालता है। साथ ही सेवा प्रदाता डाक्टर, नर्सों, वार्ड ब्वाय के लिए भी मानसिक समस्या का कारण बनता है।

यह जानकारी अवध विश्वविद्यालय के माइक्रोबायोलॉजी विभाग के प्रवक्ता शैलेन्द्र कुमार व पर्यावरण विभाग के प्रवक्ता डॉ. सिद्धार्थ शुक्ल ने दी। वे सामाजिक संगठन यूथ राउण्ड टेबिल सोसाइटी की ओर से स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में जहरीला पारा विषयक अभिमुखीकरण कार्यशाला में विचार व्यक्त कर रहे थे। कार्यशाला में उ.प्र. प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के क्षेत्रीय अधिकारी घनश्याम ने कहा कि अस्पताली कूड़ा-कचरा निस्तारण के लिए कानून बने हैं जिस का अमल कराने के लिए विभाग प्रयासरत है। डॉ. सी.पी. सिंह ने भी विचार व्यक्त किए।

Title: “Mercury can cause of mental disorders”

Date: 30 January, 2011

News Paper: “Hindustan”

प्रेसक्लब में आयोजित परिचर्चा में मंचस्थ अतिथि

अस्पतालों का कचरा सर्वाधिक खतरनाक : घनश्याम

(7) जनमोर्चा,

फैजाबाद, 2 फरवरी (अ.सं.)। अस्पतालों से निकलने वाला कचरा साधारण कचरे की अपेक्षा अधिक खतरनाक होता है। एक तरफ जहां अस्पताल रोगों से मुक्ति दिलाते हैं वहीं दूसरी तरफ उनसे निकलने वाला कचरा अनेक संक्रमक रोगों को फैलाने का कारण बनते हैं।

उक्त उद्गार उ.प्र.प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के क्षेत्रीय अधिकारी घनश्याम ने यूथ राउण्ड टेबिल सोसायटी द्वारा प्रेसक्लब में आयोजित परिचर्चा में व्यक्त की। परिचर्चा में अवध विवि के बायोकेमेस्ट्री विभाग के प्रवक्ता शैलेन्द्र कुमार ने कहा कि स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में पारा के उपयोग को कम करने के लिए कहा कि अत्यंत जहरीले पारा का दुष्प्रभाव न सिर्फ मरीजों को बल्कि स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के जीवन पर असर डालता है। जिससे अनेक तरह की मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य समस्याएं होती है।

वरिष्ठ चिकित्सक व बाल रोग विशेषा डा.केएन कौशल ने कहा कि पारा आधारित उपकरणों पर रोक लगना चाहिए जिससे कि मरीज सेवा देने वालों को भी अनेकों स्वास्थ्य समस्याओं से बचाया जा सके। उन्होंने इससे निपटने के लिए सरकार से सख्त कानून के साथ-साथ व्यापक जन जागरूकता के प्रयास की आवश्यकता बतायी। यूथ राउण्ड टेबिल के निदेशक अभिषेक सोनी ने कहा कि कचरा निकलता है जो कि संक्रमित दूषित होता है जिससे ठीक से अलग करना व व्यवस्थित रूप से इसका निस्तारण करना जरूरी होता है। श्री सोनी ने पारा आधारित उपकरणों के प्रयोग के बजाय डिजिटल थर्मामीटर व ब्लड प्रेशर मशीन के उपयोग पर जोर दिया। चिकित्सकों व नर्सिंग स्टाफ को प्रशिक्षित करने हेतु आयोजित कार्यशाला में स्वैच्छिक संगठन यूथ राउण्ड टेबिल के साथ-साथ उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड अस्पताली कचरे के निस्तारण के लिए कार्यदायी संस्था एसएस मेडिकल सिस्टम के प्रतिनिधि विभिन्न चिकित्सा इकाइयों के व चिकित्सक व नर्सिंग स्टाफ शामिल हुए। इस मौके पर क्षितिज पटेल, उपेन्द्र प्रसाद, एसके यादव, सतीश गुप्ता, सुरेन्द्र कुमार आदि मौजूद थे।

यूथ राउण्ड टेबिल ने आयोजित की परिचर्चा

जनमोर्चा
संकल्पित देश का सर्वप्रमुख हिन्दी दैनिक
फैजाबाद, इलाहाबाद एवं बरेली से प्रकाशित
पृष्ठ 12, मूल्य 2.00 रुपया
बृहस्पतिवार, 03 फरवरी, 2011
माघ शुक्ल पक्ष 1, संवत् 2067

Title: “Hospital Waste is extremely dangerous- Mr. Ghanshyam(Regional Officer-RPCB, Faizabad)”

Date: 1st February, 2011 , News Paper: “Janmorcha”

आज

लखनऊ, २ फरवरी, २०१

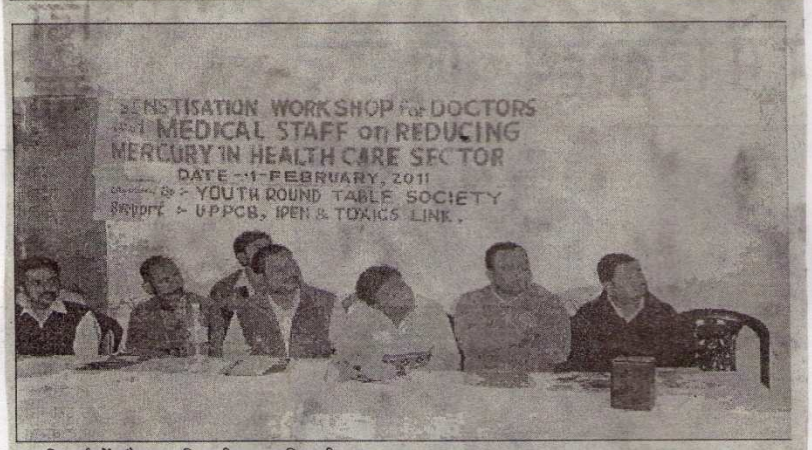

परिचर्चा में मौजूद अधिकारी व पदाधिकारी।

अस्पतालों से निकलने वाला कचरा साधारण कचरे की अपेक्षा अधिक खतरनाक

फैजाबाद(आ.सं.)। अस्पतालों से निकलने वाला कचरा साधारण कचरे की अपेक्षा अधिक खतरनाक होता है। एक तरफ जहां अस्पताल रोंगो से मुक्ति दिलाते है, वहीं दूसरी तरफ उनसे निकलने वाला कचरा अनेक संक्रामक रोगों को फैलाने का कारण बनते है। यह उद्गार उ.प्र. प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के क्षेत्रीय अधिकारी धनश्याम स्वैच्छिक संगठन ने यूथ राउण्ड टेबिल सोसाइटी द्वारा प्रेस क्लब में आयोजित परिचर्चा में व्यक्त की ज्ञात हो कि स्वैच्छिक संगठन यूथ राउण्ड टेबिल सोसाइटी द्वारा स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में जहरीले पारा के प्रयोग को कम करने के साथ-साथ जैव चिकित्सीय अपशिष्ट के बेहतर प्रबंधन हेतु व्यापक प्रयास भी किये जा रहे है। अवध विश्वविधालय के बायो केमेस्ट्री विभाग के प्रवक्ता व वैज्ञानिक शैलेन्द्र कुमार ने अपने प्रस्तूतीकरण के माध्यम से स्वास्थय से क्षेत्र में पारा के उपयोग को कम करने के लिये कहा उन्होंने कहा कि अत्यन्त जहरीले पारा का दुष्प्रभाव न सिर्फ मरीजों को बल्कि स्वास्थय सेवा प्रदाताओं व शारीरिक स्वास्थ्य समस्यायें होती है डा. के एन कौशल ने इससे निपटने के लिये सरकार से सख्त कानून के साथ-साथ व्यापक जन जागरूकता के प्रयास की आवश्यकता भी जतायी संस्था के निदेशक अभिषेक सोनी ने बताया कि अस्पतालों से बहुत सा ऐसा कचरा निकलता है जो कि संक्रमित दूषित होता है। श्री सोनी ने पारा आधारित उपकरणों के प्रयोग के बजाय डिजिटल थर्मामीटर व ब्लड प्रेशर मशीन इत्यादि के उपयोग पर जोर दिया प्रतिभाग करने वाले प्रमुख लोगों में संस्था के क्षेत्रीय अधिकारी धनश्याम वैज्ञानिक क्षितिज पटेल, इंजीनियर उपेन्द्र प्रसाद, विभिन्न अस्पतालों के डाक्टरों भी शामिल हुये।

Title: “Hospital waste is dangerous than general waste”

Date: 2nd February, 2011 , News Paper: “AAJ”

पायनियर

यूथ राउण्ड टेबिल सोसाइटी ने आयोजित की परिचर्चा

फैजाबाद। अस्पतालों से निकलने वाला कचरा साधारण कचरे की अपेक्षा अधिक खतरनाक होता है। एक तरफ जहां अस्पताल रोगों से मुक्ति दिलाते है। वही दूसरी तरफ उनसे निकलने वाला कचरा अनेक संक्रामक रोगों को फैलाने का कारण बनते है। यह उद्गार उ.प्र. प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के क्षेत्रीय अधिकारी घनश्याम स्वैच्छिक संगठन ने यूथ राउण्ड टेबिल सोसाइटी द्वारा प्रेस क्लब में आयोजित परिचर्चा में व्यक्त की। स्वैच्छिक संगठन यूथ राउण्ड टेबिल सोसाइटी द्वारा स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में जहरीले पारा के प्रयोग को कम करने के साथ साथ जैव चिकित्सीय अपशिष्ट के बेहतर प्रबंधन हेतु व्यापक प्रयास भी किये जा रहे है। इसी क्रम में चिकित्सकों व नर्सिंग स्टाफके लिये संवेदीकरण कार्यशाला का आयोजन किया गया था।

Title: Youth Round Table organized a workshop on Hospital waste & Mercury

Date: 2nd February 2011, News paper: “Pioneer”

लखनऊ | बुधवार | 2 फरवरी 2011

अमर उजाला

अस्पतालों से निकलने वाला कचरा खतरनाक

फैजाबाद। घरों से निकलने वाले कचरे की अपेक्षा अस्पताली कचरा अधिक खतरनाक होता है। चिकित्सालय में मरीजों को रोगों से मुक्ति तो मिलती है, लेकिन उसी अस्पताल से निकलने वाला कचरा लोगों में कई बीमारियां फैलाता है।

ये बात प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के क्षेत्रीय अधिकारी घनश्याम ने यूथ राउंड टेबिल सोसाइटी द्वारा प्रेस क्लब में आयोजित परिचर्चा में कही। उन्होंने कहा कि, अस्पताली कचरे से कई गंभीर बीमारियां हो सकती हैं। अवध विश्वविद्यालय के बायोकेमिस्ट्री विभाग के प्रवक्ता शैलेंद्र कुमार ने स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में पारा का कम प्रयोग करने की नसीहत दी।

उन्होंने कहा कि, पारा जहरीला होता है और स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। इस मौके पर बालरोग विशेषज्ञ केएन कौशल, यूथ राउंड टेबिल सोसाइटी के निदेशक अभिषेक सोनी, क्षितिज पटेल, उपेंद्र प्रसाद, एस के यादव आदि मौजूद रहे।

Title: Hospital release wastes are dangerous

Date: 2nd February 2011, News Paper: Amar Ujala

6 कठिनाई में आएगी भाजपा

7 कहीं आंखों में ही न टूट जाए विदेश

❑ वर्ष 64 ❑ अंक 329
❑ नगर संस्करण * *
❑ लखनऊ, सोमवार,
25 जुलाई, 2011 ई. श्रावण
मास कृष्ण पक्ष 10 सं. 2068 वि.
❑पृष्ठ 12
❑मूल्य 2.00 रुपये
www.swatantrabharat.com

लखनऊ और कानपुर से प्रकाशित

स्वतंत्र भारत

प्रकाशन का 64 वां वर्ष

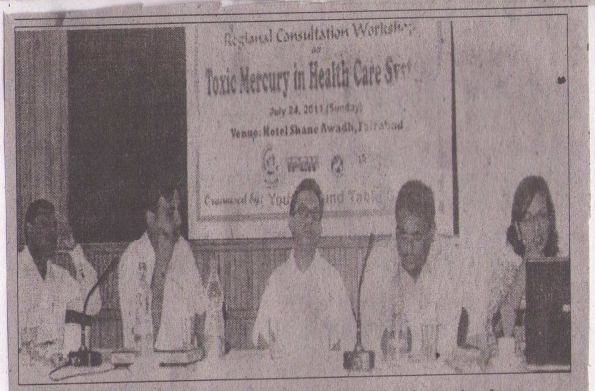

कार्यशाला के दौरान संस्था के पदाधिकारी व प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के क्षेत्रीय अधिकारी घनश्याम

चिकित्सा में पारे का उपयोग चिन्ताजनक:रागिनी

फैजाबाद, २४ जुलाई (ब्यूरो)। चिकित्सा जगत में बढ़ रहा पारे (मरकरी) का उपयोग चिंता का विषय है। एक ग्राम पारा २० एकड़ में फैले तालाब को प्रदूषित करने के लिए काफी है। उक्त बातें आज एक स्थानीय शाने अवध होटल में आइपेन व टाक्सिक लिंक के सहयोग से यूथ राउण्ड टेबिल सोसाइटी द्वारा आयोजित 'चिकित्सा क्षेत्र में पारे का दुष्प्रभाव' विषय कार्यशाला में टाक्सिक लिंक नयी दिल्ली से आयीं रागिनी कुमारी ने व्यक्त किया। संस्था के निदेशक अभिषेक सोनी ने कहा कि चिकित्सा क्षेत्र में प्रयोग किये जाने वाले थरमा मीटर, ब्लेड प्रेसर आदि मशीनों में पारे का प्रयोग होता है। यदि वह किसी तरह पानी में चला जाये तो वह विभिन्न प्रकार से मानव शरीर में पहुंचकर वह विषाक्त का काम करता है। मुख्य अतिथि उ0प्र0नि बोर्ड के क्षेत्रीय अधिकारी ने 'स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में पारे का उपयोग' नामक फैक्ट सीट का विमोचन किया।

इस अवसर पर प्रमुख रूप से संस्था के मो.अतहर समसी, उपेन्द्र कुमार, डा.शकील, प्रवीन कुमार गुप्ता, मो.आसिफ, अंजनी कुमार, मो. अरशद आदि मौजूद रहे।

Use of Mercury is dangerous in Health Care sector: Ragini

Date: 25 July 2011, News Paper: Swatantra Bharat

4.00

फैजाबाद संस्करण

राष्ट्रीय सहारा

सच कहने की हिम्मत

पर चिदंबरम

बाव P-12

सोमवार, लखनऊ, 25 जुलाई 2011

राष्ट्रीयता । कर्त्तव्य । समर्पण

जीवन के लिए पारा खतरनाक : रागिनी

फैजाबाद (एसएनबी)। चिकित्सा जगत में बढ़ रहा पारे (मरकरी) का उपयोग चिंता का विषय है। एक ग्राम पारा बीस एकड़ में फैले तालाब को प्रदूषित करने के लिए काफी है।

उक्त बातें आज राउंड टेबल सोसयाटी द्वारा आयोजित चिकित्सा क्षेत्र में पारे का दुष्प्रभाव विषयक कार्यशाला में नई दिल्ली से आयी रागिनी कुमारी ने कार्यशाला में उपस्थित डाक्टरों को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने बताया कि जिस प्रकार से चिकित्सा क्षेत्र में पारे का प्रयोग किया जा रहा है। यदि इसका प्रयोग इसी प्रकार बढ़ता रहा तो यह मानव स्वास्थ्य के लिए अति घातक होगा।

▶ चिकित्सा क्षेत्र में पारे के दुष्प्रभाव पर हुई कार्यशाला

उन्होंने बताया कि पारा एक भारी धातु है जो एक बार यदि व्यक्ति के भीतर प्रविष्ट हो जाए तो शरीर के जोड़ों के खुल जाने की आशंका प्रबल हो जाती है जिससे व्यक्ति की मृत्यु भी संभव है। निदेशक अभिषेक सोनी ने बताया कि चिकित्सा क्षेत्र में प्रयोग होने वाले थर्मामीटर, ब्लडप्रेशर मापने की मशीन आदि में जिस पारे का प्रयोग होता है।

यदि वह किसी प्रकार से पानी के क्षेत्र तालाब, नदी, नाले आदि में चला जाए तो मछलियों के साथ इसको खाने वाले व्यक्ति के शरीर में इसका प्रवेश होकर शरीर को विषाक्त बनाने का काम करती हैं। मुख्य अतिथि उप्र प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के क्षेत्रीय अधिकारी ने स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में पारे का उपयोग नामक फैक्टशीट का विमोचन करते हुए वहस प्रकार के आयोजन के लिए प्रशंसा की। कार्यशाला में प्रमुख रूप से संस्था के महासचिव मो. अतहर शम्सी, उप्र प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के उपेंद्र कुमार, डा. शकील, प्रवीण कुमार गुप्ता, मो. आसिफ, अंजनी कुमार आदि लोग उपस्थित थे।

कार्यशाला में मौजूद रागिनी व अन्य अतिथि। फोटो : एसएनबी

Mercury is Dangerous for Life: Ragini **(Toxics Link)**

25 July 2011, News Paper: Rastriya Sahara

हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया
सोमवार, 25 जुलाई 2011, लखनऊ, पांच प्रदेश, 16 संस्करण, फैजाबाद संस्करण
www.livehindustan.com

पारे के बढ़ते उपयोग पर चिन्तित

फैजाबाद | वरिष्ठ संवाददाता

चिकित्सा जगत में बढ़ रहा पारे (मरकरी) का उपयोग चिन्ता का विषय है। एक ग्राम पारा 20 एकड़ में फैले तालाब को प्रदूषित करने के लिए काफी है।

यह बात सिविल लाइन्स स्थित एक होटल के सभागार में आईपेन व टाक्सिक लिंक के सहयोग से यूथ राउण्ड टेबल सोसायटी की ओर से आयोजित 'चिकित्सा क्षेत्र में पारे का दुष्प्रभाव' विषयक कार्यशाला में टाक्सिक लिंक नई दिल्ली से आई रागिनी कुमारी ने कही। उन्होंने कहा कि पारे का प्रयोग यदि इसी तरह बढ़ता रहा तो यह मानव स्वास्थ्य के लिए बड़ा ही घातक होगा। सोसायटी के निदेशक अभिषेक सोनी ने बताया कि चिकित्सा क्षेत्र में थर्मामीटर व ब्लड प्रेशर मापने की मशीन में पारे का प्रयोग होता है। यदि यह किसी प्रकार से तालाब, नदी या नाले में चला जाए तो मछलियों के साथ इसे खाने वाले व्यक्ति के शरीर में इसका प्रवेश होकर यह शरीर को विषाक्त बनाने का काम करता है। मुख्य अतिथि प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के क्षेत्रीय अधिकारी घनश्याम ने स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में पारे का उपयोग नामक फैक्ट शीट का विमोचन किया। कार्यशाला में सोसायटी के महासचिव मो. अतहर शम्सी, उपेन्द्र कुमार, डॉ. शकील, प्रवीण गुप्त, मो. आसिफ, अंजनी कुमार व मो. अरशद मौजूद रहे।

पारे का उपयोग नामक फैक्ट शीट का विमोचन करते अतिथि • हिन्दुस्तान

Consultation on excess use of Mercury

25 July 2011, News Paper: Hindustan

सहकारिता पर संचालित देश का सर्वप्रमुख हिन्दी दैनिक

जनमोर्चा

फैजाबाद, इलाहाबाद एवं बरेली से प्र

पृष्ठ 12, मूल्य 2.50 रुपया

सोमवार, 25 जुलाई, 2011

श्रावण कृष्ण पक्ष 10, संवत् 2068

पारे का उपयोग जीवन के लिए घातक : रागिनी

फैजाबाद, 24 जुलाई। चिकित्सा जगत में बढ़ रहा पारे (मरकरी) का उपयोग चिंता का विषय है एक ग्राम पारा बीस एकड़ में फैले तालाब को प्रदूषित करने के लिए काफी है। उक्त बातें आज होटल शाने अवध में आइपेन (आईपीईएन) व टाक्सिक लिंक के सहयोग से यूथ राउण्ड टेबल सोसायटी द्वारा आयोजित चिकित्सा क्षेत्र में पारे का दुष्प्रभाव विषयक कार्यशाला में टॉक्सिक लिंक नई दिल्ली से आयी रागिनी कुमारी ने कार्यशाला में उपस्थित डाक्टरों को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने बताया कि आज जिस प्रकार से चिकित्सा क्षेत्र में पारे का प्रयोग यदि इसका प्रयोग इसी प्रकार बढ़ता रहा तो यह मानव स्वास्थ्य के लिए बड़ा ही घातक होगा, उन्होंने आगे बताया कि पारा एक भारी धातु है जो एक बार यदि व्यक्ति के भीतर प्रविष्ट हो जाए तो शरीर के जोड़ों के खुल जाने की आशंका प्रबल हो जाती है जिससे व्यक्ति की मृत्यु भी संभव है। कार्यशाला में बोलते हुए संस्था के निदेशक अभिषेक सोनी ने बताया कि चिकित्सा क्षेत्र में प्रयोग होने वाले थर्मामीटर, ब्लड प्रेशर मापने की मशीन आदि में जिस पारे का प्रयोग होता है यदि वह किसी प्रकार से पानी के क्षेत्र तालाब, नदी, नाले आदि में चला जाय तो मछलियों के साथ इसको खाने वाले व्यक्ति के शरीर में इसका प्रवेश होकर शरीर को विषाक्त बनाने का काम करती है। कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में उ.प्र. प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के क्षेत्रीय अधिकारी ने स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में पारे का उपयोग नामक फैक्टशीट का विमोचन करते हुए कार्यशाला के आयोजक यूथ राउण्ड टेबल सोसायटी द्वारा इस प्रकार के आयोजन के लिए प्रशंसा करते हुए भविष्य में संस्था को समय-समय पर सहयोग का वायदा किया।

उक्त कार्यशाला में प्रमुख रूप से संस्था के महासचिव मो. अतहर शम्सी, उ.प्र. प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के उपेन्द्र कुमार डा. शकील प्रवीण कुमार गुप्ता, मो. आसिफ, अंजनी कुमार व मो. अरशद जी उपस्थित रहे।

यूथ राउण्ड टेबिल द्वारा फैजाबाद में आयोजित कार्यशाला में दिल्ली की रागिनी कुमारी को स्मृति चिन्ह देते हुए निदेशक अभिषेक सोनी।

Use of Mercury is dangerous for life: Ragini (Toxics Link)

25 July 2011, News Paper: Janmorcha

हिन्दी जगत में
सर्वाधिक लोकप्रिय

आज

लखनऊ, सोमवार, २५ जुलाई, २०११

www.ajsamachar.com

पारे का उपयोग मानव स्वास्थ्य के लिये घातक

फैजाबाद (आ0स0) चिकित्सा जगत मे बढ़ रहा पारे (मरकरी) का उपयोग चिंता का विशय है। एक ग्राम पारा बीस एकड़ में फैले तालाब को प्रदुशित करने के लिए काफी है। उक्त बाते आज होटल पने अवध मे आइपेन व टाक्सिक लिंक के सहयोग से यूथ राउण्ड टेबल सीसायटी द्वारा आयोजित चिकित्सा क्षेत्र में पारे का दुश्प्रभाव विशयक कार्यषाला में टॉक्सिक लिंक नई दिल्ली से आयी रागिनी कुमारी ने कार्यषाला में उपस्थित डाक्टरों को सम्बोधित करते हुए कहीं उन्होंने बताया कि आज जिस प्रकार से चिकित्सा क्षेत्र में पारे का प्रयोग हो रहा है यदि इसका प्रयोग इसी प्रकार बढ़ता रहा तो यह मानव स्वास्थ्य के लिए बड़ा ही घातक होगा, उन्होंने आगे बताया कि पारा एक भारी धातु है जो एक बार यदि व्यक्ति के भीतर प्रविश्ट हो जाय तो षरीर के जोडो के खुल जाने की आषंका प्रबल हो जाती है जिससे व्यक्ति की मृत्यु भी सम्भव है। कार्यषाला में बोलते हुए संस्था के निदेषक अभिशेक सोनी ने बताया कि चिकित्सा क्षेत्र में प्रयोग होने वाले थर्मामीटर, ब्लडप्रेषर मापने की मषीन आदि में जिस पारे का प्रयोग होता है यदि वह किसी प्रकार से पानी के क्षेत्र तालाब, नदी, नाले आदि में चला जाय तो मछलियों के साथ इसको खाने वाले व्यक्ति के षरीर में इसका प्रवेष होकर षरीर को विशाक्त बनाने का काम करती है। कार्यषाला में मुख्य अतिथि के रूप में उ0प्र0 प्रदूशण नियंत्रण बोर्ड के क्षेत्रीय अधिकारी ने स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में पारे का उपयोग नामक फैक्टषीट का विमोचन करते हुए कार्यषाला के आयोजक यूथ राउण्ड टेबल सोसायटी द्वारा इस प्रकार के आयोजन के लिए प्रषंसा करते हुए भविश्य में संस्था को समय समय पर सहयोग का वायदा किया। उक्त कार्यषाला में प्रमुख रूप से संस्था के महासचिव मो0 अतहर षम्सी उ0प्र0 प्रदूशण नियंत्रण बोर्ड के उपेन्द्र कुमार डा0 षकील प्रवीण कुमार गुप्ता, मो0 आषिफ अंजनी कुमार व मो0 अरषाद उपस्थित रहे।

Use of Mercury is injurious to health

25 July 2011 News paper: AAJ

लखनऊ | सोमवार | 25 जुलाई 2011

अमर उजाला

पारे के अधिक प्रयोग पर जताई चिंता

फैजाबाद। शहर के सिविल लाइंस स्थित एक होटल में यूथ राउंड टेबल सोसाइटी ने चिकित्सा जगत में पारे का दुष्प्रभाव विषयक कार्यशाला आईपेन व टॉक्सिक लिंक के सहयोग से आयोजित की। इस क्षेत्र में बढ़ रहे पारे के प्रयोग पर चिंता जाहिर की गई। एक ग्राम पारा 20 एकड़ में फैले तालाब को दूषित करने के लिए काफी है।

नई दिल्ली से आई रागिनी कुमारी ने कहा कि आज जिस प्रकार चिकित्सा क्षेत्र में पारे का प्रयोग किया जा रहा है। यदि इसी प्रकार किया जाता रहा तो मानव स्वास्थ्य के लिए बड़ा ही घातक होगा। पारा एक भारी धातु है, यदि यह शरीर में चला जाए तो शरीर के जोड़ों के खुल जाने की आशंका प्रबल हो जाती है, जिससे व्यक्ति की मृत्यु भी हो सकती है। कार्यशाला में मो: अतहर शम्सी, उपेंद्र कुमार, डॉ. शकील, प्रवीण कुमार, मो. आसिफ आदि मौजूद रहे।

25 July 2011 News Paper: Amar Ujala